अजब- गजब

१.अजीब है ये कॉफी शॉप, जहां रातों में आकर सो जाते हैं गली के कुत्ते

ग्रीस के लेसबोस आइलैंड के एक कॉफी शॉप को रात में कुत्तों के लिए खुला छोड़ दिया जाता है। इस दौरान सड़कों के कुत्ते शॉप के अंदर आकर सो जाते हैं और सुबह होते ही चले जाते हैं। इसका नाम हॉट स्पॉट है, जो मिटिलेन में है। अपने इस यूनिक आइडिया के कारण ये कॉफी शॉप चर्चा में है।

बताया जाता है कि लेसबोस आइलैंड की राजधानी मिटिलेन में खर्च कम करने के लिए ज्यादातर लोगों ने अपने पालतू कुत्तों को सड़कों पर छोड़ दिया। ऐसे में हॉट स्पॉट के ऑनर ने अपने शॉप के दरवाजे इनके लिए खोल दिए। रात में जब कस्टमर्स का आना बंद हो जाता है, तब ये कुत्ते कॉफी शॉप की सीटों पर आकर सो जाते हैं और सुबह होते ही बाहर निकल जाते हैं।

कॉफी शॉप में काम करने वाले एक वेटर ने बताया कि सड़कों पर कुत्ते इधर-उधर टहलते रहते थे। ऐसे में हमने अपने कॉफी शॉप को उनके लिए खोल दिया। इससे हमें कोई दिक्कत नहीं होती है। जुलाई से लगातार ये कुत्ते रातों को कॉफी शॉप में चले आते हैं। बता दें कि इस कॉफी शॉप का फोटो पहली बार ३ दिसम्बर को सामने आया था, जिसके बाद ये वायरल हो गया।

२.सांप को ही निगल गया ये मेंढक!

दुनिया बहुत बड़ी और विविधता से भरी है। कई चीजें जो हमारे यहां होती हैं, वो दूसरी जगहों पर अलग हो जाती है। जैसे हिंदुस्तान में हम अक्सर मेढकों को सांप का निवाला बनते देखते हैं, पर ऑस्ट्रेलिया से एक ऐसी वीडियो क्लिप सामने आई है, जिसमें बड़े से मेंढक ने सांप को ही निगल लिया। जी हां, ऑस्ट्रेलिया में फिल्माए गए वीडियो में साफ दिख रहा है कि मेंढक सांप को निगल जाता है। दरअसल, मेढकों की कई प्रजातियां होती हैं। हमारे यहां भी बड़-छोटे मेंढक होते हैं। ऑस्ट्रेलिया में भी ऐसा है, पर वहां के कुछ मेंढक बहुत बड़े होते हैं। ऐसे ही एक बड़े मेंढक ने सांप को ही निगल लिया।

३. तीन साल के बच्चे पर जमीन हथियाने का केस

पाकिस्तान में एक अजीब मामला सामने आया, जिसमें तीन साल के एक बच्चे के खिलाफ जमीन हथियाने और जायदाद हड़पने का मामला दर्ज किया गया है। इस्लामाबाद के शालीमार पुलिस थाने में इस बच्चे के खिलाफ कथित तौर पर सेक्टर एफ-१० में जमीन हथियाने और जायदाद हड़पने का मामला दर्ज किया गया है।

खबर के मुताबिक बच्चे के परिवार वालों ने उसकी गिरफ्तारी से पहले ही अदालत में उसकी जमानत की याचिका दायर कर दी। रिपोर्ट के मुताबिक मामले को सुनने के बाद अदालत ने इस्लामाबाद पुलिस की इस बड़ी भूल पर नाराजगी जाहिर की। अदालत ने थाना प्रभारी और मामले की जांच कर रहे अधिकारी को समन जारी कर अदालत के सामने पेश होने और अपनी स्थिति स्पष्ट करने को कहा है।

है न आश्चर्य

तीन धर्मों में एक समानता है कि तीनों के साल में 12 महीने हैं पर कुल दिन अंग्रेजों के 365, हिन्दुओं के 360 और इस्लाम के 348 है। अब हमें तो जून, जुलाई सिर्फ मालूम है सो सारा कारोबार अंग्रेजियत से चलता है सो -

(1) एक साल 2015 में एक ही वर्ष में 4 जनवरी व 24 दिसंबर को इद इ मिलाद रहा।

(2) एक ही दिन 24 दिसंबर को इद इ मिलाद व गुरु दत्त जयंती रही।

(3)महीने का पवित्र दिन पूर्णिमा है, और 25 को पूर्णिमा भी थी। और इसामसीह का जन्मदिन भी। यानि प्रकृति की पूर्णिमा, ठीक फ्राइडे को येशु जन्म दिन पर तथा हिंदुओं का गुरुदत्त जन्म गुरुवार को इस्लाम के इद- इ- मिलाद के साथ। 24 व 25 के दो दिनों में प्रकृति, इसाई हिन्दु व मुसलमान एक साथ आये हैं।

(4)असली मजा ये है कि अगले वर्ष ऊ 12.12.16 को दत्त जन्म व इद एक साथ हैं-

है न आश्चर्य?

- किशोर तारे

क्या अपने ही बच्चों को खा जाते थे आदिमानव?

ज़िक्र जब आदिमानव का होता है तो जेहन में तस्वीर एक डरावने, बड़े बालों-दांतों और नाखूनों वाले इंसान की उभरती है, जो जानवरों का मांस खाकर अपना पेट भरा करते थे।

लेकिन, नया अध्ययन बताता है कि बात सिर्फ जानवरों तक ही सीमित नहीं है, आदिमानव इंसानों के मांस से भी पेट भरते थे। चीन में हेनन प्रांत के झुआंग शहर के पास पुरातत्व विभाग को एक लाख साल पुराने मानव अस्थियों के ऐसे नमूने मिले हैं जिनसे आदिमानव के नरभक्षी होने की बात पुख्ता होती है।

पुरातत्वविदों को मिली मानव हड्डी एक जवान पुरुष की है, जिसे दांतों से चबाया गया था।

शोधार्थियों की मानें तो एक लाख साल पहले इंसान बच्चे आदिमानव का निवाला बन जाया करते थे। शोधार्थियों के मुताबिक खुदाई में जांघ की हड्डी के दो टुकड़े मिले हैं, जिन पर दांतों के निशान दिखाई देते हैं। दांतों के ये निशान चीन में रहने वाले किसी इंसान की तरह लगते हैं।

ये हड्डियों के टुकड़े मानव की झुचांग प्रजाती के बताए जा रहे हैं। इस शोधकार्य में लगे मुख्य पुरातत्वविद ली झानयांग की मानें तो हड्डियों पर दांतों से चबाने के निशान साफ दिखाए पड़ते हैं। झानयांग ने अंदेशा जताया है कि हो सकता है आदिमानव इंसान की हड्डियों से मिलने वाले पोषक तत्वों को खाते हों।

मानव की जांघ की हड्डियों के ये टुकड़े उसी जगह मिले हैं जहां साल २०१२ में मानव खोपड़ी के सोलह टुकड़े मिले थे। ये खोपड़ी भी एक जवान बच्चे की बताई जाती है। इसी इलाके में पत्थर के हथियार और जानवरों के भी कुछ अवशेष मिले हैं।

पुरातत्वविदों का मानना है कि आदिमानव नरभक्षी तो था ही साथ ही वो मांस को साफ करके खाया करता था। उधर लंदन के नेशनल हिस्ट्री म्यूजियम और यूनिवर्सिटी कॉलिज लंदन के शोधार्थियों के मुताबिक १४ हजार ७०० साल पहले गुफाओं में रहने वाला आदिमानव नरभक्षी हुआ करता था

नए अध्ययन में ये भी पता चला है कि आदिमानव इंसान की खोपड़ी से कप जैसे आकार के बर्तन भी बनाता था। शोधार्थियों की मानें तो साल १८८० से १९९२ के बीच में गुफाओं से जो अवशेष मिले हैं उनमें दांतों के निशान पाए गए।

इस खोज ने नए सिरे से उस विवादास्पद बहस को हवा दे दी है कि चीन की ज्यादातर आबादी उन होमो सेपियंस की वंशज है, जो वहां पलायन कर गए थे। माना जाता है कि ये होमो सेपियंस करीब सत्तर हजार साल पहले अफ्रीका से आए थे।

विज्ञान के क्षेत्र में नए आविष्कार करने के लिए क्या-क्या तामझाम चाहिए? बड़ी-बड़ी इमारतें, ऊंची डिग्रियां और बेशुमार दौलत? विज्ञान में खोज के लिए ये सब उतना जरूरी नहीं है। जरूरी है वैज्ञानिक मानसिकता या प्रवृत्ति। जिन्हें भी यह प्रवृत्ति पाई गई, वे कुछ न कुछ कर गुजरे हैं। यह बात और है कि शोध पत्रिकाओं में उनका नाम नहीं है, लेकिन आम आदमी की जिंदगी को सुखद बनाने में उनका खासा योगदान है। और हां, उनसे उन्होंने कमाई भी की है।

जिन खोजा तिन पाइया

जरा सोचिए, बालों में लगने वाली हेयर पिन में बल किसने खिलाए होंगे? कागजों में फंसाने वाले क्लिप की खोज किसने की? आपकी पैंट में लगी चैन या जिप का निर्माता कौन है? बाड़ों में लगने वाले कांटेदार तारों की खोज किसने की? फाउंटेनपेन और बालपेन के खोजकर्ता कौन सी प्रयोगशालाओं में काम करते थे? ऐसी ही न जाने कितनी खोजें हैं जो हम और आप जैसे दिमाग वाले लोगों की खोजें हैं।

फिलेडेल्फिया के हाइमन लिपमेन को ही लीजिए। पेंसिल से काम करते-करते अचानक उन्हें रबर की जरूरत पड़ गई। रबर नदारद था। तब लिपमेन को लगा अगर रबर पेंसिल के ही सिरे पर होती तो यह स्थिति न आती। बस पेंसिल के दूसरे सिरे पर रबर जड़ दी। उनके इस आविष्कार का पेटेंट बिका एक लाख डालर में।

खुर पेंसिल की खोज भी कम दिलचस्प नहीं। सोलहवीं सदी में कंबरलैंड (इंग्लैण्ड) में बेरोडेल के पास तूफान में एक बड़ा पेड़ जड़ से उखड़ गया। गड्ढे में काला-काला खनिज दिखाई दिया। यह ग्रेफाइट था। शुरू में चरवाहों ने इसका इस्तेमाल भेड़ों पर निशान लगाने में किया। बाद में उससे मार्किंग स्टिक्स बनीं। हाथ गंदे न हों इसलिए लोग उन पर धागे लपेटते थे। ज्यों-ज्यों पेंसिल घिसती जाती, लिपटा हुआ धागा लोग खोलते जाते।

पेंसिल के ऊपर का खोल किसी वैज्ञानिक ने नहीं, एक बढ़ई ने बनाया। अमेरिका का विलियन मनरो लकड़ी की अलमारियां बनाता था। उसने अपने कारखाने में उपलब्ध एक मशीन से लड़की की 15 से 18 सेन्टीमीटर लंबी और संकरी फट्टियां काटीं। हर पट्टी में ग्रेफाइट की छड़ की आधी मोटाई का खांचा बनाया। फिर उसमें ग्रेफाइट की छड़ रखकर ऊपर से एक और पट्टी रखकर उसे गोंद से जोड़ दिया। इस तरह पेंसिल बनाकर उसने लाखों डॉलर कमाए।

होल्डर की निब को स्याही में डुबो-डुबो कर लिखने से जब वाटरमैन तंग आ गए तो उन्होंने सोचा क्यों न एक नली में स्याही भरकर उसमें निब लगाकर लिखा जाए। आइडिया कारगर रहा और फाउंटेनपेन हमारे हाथों में है।

पेपर क्लिप की कहानी और भी मजेदार है। वाशिंगटन डी.सी. में एक बाबू बस स्टैण्ड पर खड़ा बस का इंतजार कर रहा था। उसे एक हेयर पिन मिल गई। वह समय काटने के लिए उसे यों ही मोड़ने लगा। थोड़ी देर में उसे लगा कि उसने हेयर पिन को एक विशेष आकार में मोड़ दिया है। उसे लगा कागजों में फंसाने के लिए यह उपयुक्त रहेगा। बस वह सीधे पेटेंट ऑफिस गया और उसे पेटेंट करा आया। आज पेपर क्लिप हमारे लिए जरूरी चीज बन गई है।

सेफ्टीपिन की खोज भी कहते हैं ऐसे ही हुई। एक आलसी आदमी की बीवी के ब्लाउज का बटन टूट गया। बीवी ने उसे बटन खरीद कर लाने का हुक्म दिया। आलसी आदमी भला क्यों उठता। उसने इधर-उधर देखा और एक पिन को मोड़कर कहा- फिलहाल इसे फंसा लो। तरीका काम कर गया। थोड़े से सुधार से सेफ्टीपिन बनने लगी। 1849 में वाल्टर हंट ने उसका पेटेंट ले लिया।

विलियम पेंटर ने भी एक छोटे से आविष्कार से अरबों रुपए कमाए। उसने सोडा वाटर और बियर की बोतलों पर लगने वाले एयर टाइट ढक्कन बनाकर यह पैसा कमाया।

बिजली कर्मचारी डेनियल ओ सुलीवान का आविष्कार तो मजबूरी में हो गया। उसकी कंपनी ने उसे रबर का एक पैड दिया और कहा कि वह बिजली की जांच करते समय उस पर खड़ा रहे। इससे बिजली का झटका नहीं लगेगा। भुलक्कड़ सुलीवान वह पैड ले जाना ही भूल जाते और बिजली का झटका खाते। एक दिन उसने रबर के कई टुकड़े किए और उन्हें अपने जूतों की एड़ी और सोल में ठोक लिया। उसे आराम हो गया। फिर उसने इस युक्ति को पेटेंट करा लिया।

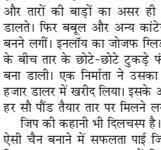

कांटेदार तार आज बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। सौ साल पहले तक किसानों ने बहुत परेशानियां उठाईं। बांस और तारों की बाड़ों का असर ही नहीं होता था। पशु उन्हें तोड़ डालते। फिर बबूल और अन्य कांटेदार पेड़ों की शाखाओं से बाड़ बनने लगीं। इनलॉय का जोजफ ग्लिडन तेज निकला। उसने दो तारों के बीच तार के छोटे-छोटे टुकड़े फंसाकर कांटेदार तारों की रस्सी बना डाली। एक निर्माता ने उसका यह आविष्कार 1873 में 60 हजार डालर में खरीद लिया। इसके अलावा उसे 25 सेंट की रायल्टी हर सौ पौंड तैयार तार पर मिलने लगी।

जिप की कहानी भी दिलचस्प है। व्हिटकॉब एल. जडसन ने एक ऐसी चैन बनाने में सफलता पाई जिसे आसानी से खोला और बंद किया जा सकता था। 1893 में शिकागो के विश्व व्यापार मेले में उसने इसका प्रदर्शन किया। मीडविले के एक युवा वकील लेविस वाकर को उसके व्यापारिक इस्तेमाल की काफी संभावनाएं दिखीं। दोनों ने भागीदारी में काम करने का प्रस्ताव स्वीकार किया। 15 साल तक जडसन खिसकने वाली चेन बनाने की मशीन बनाने में लगे रहे, पर असफल रहे। हार कर वे फर्म से अलग हो गए। पर वकील वाकर ने हिम्मत नहीं हारी।

एक दिन वाकर की मुलाकात स्वीडन के एक इंजीनियर गिडियन संडबैक से हुई। वाकर ने उनसे सहायता का अनुरोध किया। पहले तो संडबैक को लगा कि उसके साथ मजाक किया जा रहा है, पर चैन निर्माण की प्रगति देखकर उसने सहायता का निश्चय किया। 1905 में उसका पेटेंट ले लिया गया। पर चैन नहीं बिकी। हार कर वाकर वकालत के पेशे में लौट गए। इसी बीच उनके दो बेटों ने चैन की बिक्री के लिए सेल्समैन का काम शुरू किया। उन्होंने एक टेलर को अपने साथ मिलाया। चैनें चल निकलीं। 1920 तक हुकलेस फासनर कंपनी, मीडविले में 30 कर्मचारी काम करने लगे।

1920 में ही गुडरिच कंपनी के एक अधिकारी एफ.एच. मार्टिन की नजर तंबाकू के एक बटुए पर पड़ी। उसमें ऐसी ही चैनें लगीं थीं। उसे लगा कि उसकी कंपनी के जूतों के लिए तो ऐसी ही चैन की जरूरत है। मार्टिन ने वैसी ही चैन लगाकर जूतों का एक जोड़ा तैयार कराया और कंपनी के अध्यक्ष बरट्राम जी वर्क को दिखाया। वर्क खुशी से चिल्ला पड़े। इस तरह चैन जिपर बन गई। जूतों, बटुओं, पेंटों और जैकिटों से लेकर न जाने कहां-कहां उसका उपयोग हो रहा है। कई कंपनियां हर दिन लाखों की संख्या में उन्हें बना रही हैं।

पावडर के डिब्बे पर लगे ढक्कन को कभी आपने गौर से देखा है। उसे थोड़ा सा घुमाते ही डिब्बे के छेद दिखने लगते हैं। उनसे पावडर छिड़का जा सकता है। उल्टी दिशा में घुमाते ही छेद बंद। यह छोटा सा आविष्कार विलियम केडल का है। इसका पेटेंट उन्होंने 25 हजार डालर में बेचा।

सड़कों पर सफेद पट्टियां न बनी हों तो न जाने कितनी दुर्घटनाएं रोज हों। फ्रेस्त्रो, केलिफोर्निया के हेवर्ड आर. ला को इन्हें सूझाने का श्रेय जाता है। इसी तरह एक दुकानदार ने कागज की थैलियों में दो मजबूत धागे चिपकाकर कागज के मजबूत थैलों का चलन चला दिया। जे.ई. ब्रेंडन बर्गर नामक एक स्विस ने जिलेटिन पेपर बना डाला। पेपरकप, आइसक्रीम की लकड़ी की चम्मच, बोतलों के ढक्कन खोलने और साइकिल के पाने और न जाने कितनी रोजमर्रा की चीजें इसी तरह खोजी गईं। ऐसी खोजें हम आज भी कर सकते हैं।

हवाई जहाज की कहानी जानो..

आसमान में ऊंची उड़ान भरते हवाई जहाज को तुमने कई बार देखा ही होगा। पर क्या तुम यह जानते हो कि इसे कब बनाया था और किसने बनाया था? आखिर किसके मन में इसे बनाने का ख्याल आया था। इसे बनाने के पीछे क्या प्रेरणा थी? नहीं पता, कोई बात नहीं। आज हम आपको बताते हैं हवाईजहाज का इतिहास।

इसे सबसे पहले बनाया था राइट ब्रदर्स ने। विल्बर और ओरविल में केवल चार साल का अंतर था। जिस समय उन्हें हवाई जहाज बनाने का ख्याल आया, उस समय विल्बर सिर्फ 11 साल का था और ओरविल की उम्र थी 7 साल। हुआ यूं कि एक दिन उनके पिता उन दोनों के लिए एक उड़ने वाला खिलौना लाए। यह खिलौना बांस, कॉर्क, कागज और रबर

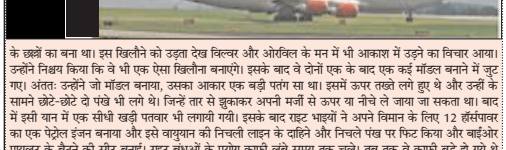

के छल्लों का बना था। इस खिलौने को उड़ता देख विल्बर और ओरविल के मन में भी आकाश में उड़ने का विचार आया। उन्होंने निश्चय किया कि वे भी एक ऐसा खिलौना बनाएंगे। इसके बाद वे दोनों एक के बाद एक कई मॉडल बनाने में जुट गए। अंतत: उन्होंने जो मॉडल बनाया, उसका आकार एक बड़ी पतंग सा था। इसमें ऊपर तख्ते लगे हुए थे और उन्हीं के सामने छोटे-छोटे दो पंखे भी लगे थे। जिन्हें तार से झुकाकर अपनी मर्जी से ऊपर या नीचे ले जाया जा सकता था। बाद में इसी यान में एक सीधी खड़ी पतवार भी लगायी गयी। इसके बाद राइट भाइयों ने अपने विमान के लिए 12 हॉर्सपावर का एक पेट्रोल इंजन बनाया और इसे वायुयान की निचली लाइन के दाहिने और निचले पंख पर फिट किया और बाईंओर पायलट के बैठने की सीट बनाई। राइट बंधुओं के प्रयोग काफी लंबे समय तक चले। तब तक वे काफी बड़े हो गये थे और अपने विमानों की तरह उनमें भी परिपक्वता आ गयी थी। आखिर में 1903 में 17 दिसम्बर को उन्होंने अपने वायुयान का परीक्षण किया। पहली उड़ान ओरविल ने की। उसने अपना वायुयान 36 मीटर की ऊंचाई तक उड़ाया। इसी यान से दूसरी उड़ान विल्बर ने की। उसने हवा में लगभग 200 फुट की दूरी तय की। तीसरी उड़ान फिर ओरविल ने और चौथी और अन्तिम उड़ान फिर विल्बर ने की। उसने 850 फुट की दूरी लगभग 1 मिनट में तय की।

यह इंजन वाले जहाज की पहली उड़ान थी। उसके बाद नये-नये किस्म के वायुयान बनने लगे। पर सबके उड़ने का सिद्धांत एक ही है।

रॉकेट कैसे जाता है ऊपर

रॉकेट जब छोड़ा जाता है तो उसके नीचे से आग की एक पूंछ निकलती है और फिर वह ऊपर उठता है। दरअसल, रॉकेट में ईंधन जलता है, जिससे गर्म गैस निकलती है। स्पेस शटल में तरल हाइड्रोजन और ठोस प्रोपलेंट का उपयोग होता है। ठोस प्रोपलेंट जलता है, पर विस्फोटक नहीं होता। रॉकेट को पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल से बाहर निकालना आसान काम नहीं होता है। इसमें एक बंद चैंबर में विस्फोटक रासायनिक प्रक्रिया होती है, जिससे रॉकेट के पीछे के भाग से कोन के आकार में गर्म गैसें निकलती हैं। इसी ऊर्जा से रॉकेट का इंजन १६,००० कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से जमीन से ऊपर उठ पाता है। इंजन रॉकेट लॉन्च के २ मिनट बाद ही शटल से अलग हो जाता है। रॉकेट का बाहरी टैंक भी कुछ देर बाद ही खाली हो जाता है, पर तब तक रॉकेट अंतरिक्ष में बहुत दूर जा चुका होता है।

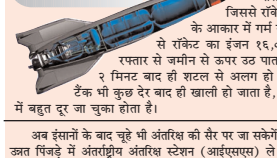

अब चूहे भी करेंगे अंतरिक्ष की सैर

अब इंसानों के बाद चूहे भी अंतरिक्ष की सैर पर जा सकेंगे। उन्हें ऊपत पिंजड़े में अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) ले जाया जाएगा। एक मानव रहित अंतरिक्ष एक्स ड्रैगन कार्गो पोत चूहों को उनके नए घर तक ले जाएगा जहां अनुसंधान में मददगार जीवों को अंतरिक्ष में ले जाने के लिए रखा जाता है। नासा के मुताबिक इन ऊपत पिंजड़ों में १० मूषकों या छह चूहों को रखा जा सकता है जहां उन्हें पानी, खाना, प्रकाश और ताजी हवा उपलब्ध होगी। सूत्रों की माने तो इनके निवास के पास डाटा लिंक होंगे औरोवजुअल-इन्फ्रारेड वीडियो प्रणाली भी होगी। आईएसएस पर अंतरिक्ष यात्रियों को शून्य गुरुत्वाकर्षण में कई तरह की समस्याओं का सामना करना होता है। मांसपेशियों के द्रव्यमान में गिरावट, हड्डियों की कमजोरी, कार्डियोवैस्क्यूलर सहित अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएंसे गुजरना पड़ता है।

रेत में बिखरे हैं रंग ही रंग

चीन में डेक्सिया लैंडफॉर्म नाम की ऐसी जगह है, जहां की रेत और पत्थर रंग-बिरंगे हैं। छोटे आकार वाले पत्थरों और लाल रंग की रेत की पूरी श्रृंखला सी बन गई है यहां पर। आरंभ में तो ऐसा लगता है जैसे किसी ने पत्थरों को कई रंगों में रंग दिया हो, पर इनके ये रंग प्राकृतिक हैं। यहां छोटे-छोटे पहाड़ मुख्य रूप से दक्षिण चीन में दूर-दूर तक फैले हैं।।

काफी पुराना होने के कारण इनके बीच दर्रे बन गए हैं, जो समय के साथ और गहरे हो गए हैं। तुम्हें ये जानकर हैरानी होगी कि इस श्रृंखला के बीच-बीच में गुफाएं भी हैं। साल 2010 में दक्षिण चीन के इस चीन डेक्सिया में कई गुफाओं को वर्ल्ड हेरिटेज साइट के तहत चुना गया था। वैज्ञानिकों का मानना है कि तकरीबन 80 मिलियन यानी 800 लाख साल पहले लाल रंग की रेत धरती पर मौजूद थी। लेकिन जब धरती पर काफी परिवर्तन आए, उस प्राकृतिक बदलाव में लाल रंग की रेत भी धरती में दबती चली गई। इसके बाद 150 लाख साल पहले धरती के भीतर टेक्टोनिक प्लेट में हुई हलचल से काफी कुछ बदल गया। इसके हजारों साल बाद हिमालयन रेंज में अचानक बदलाव आने से ये रेत बाहर आ गई। ये रेत करीब 290 स्क्वायर किलोमीटर के क्षेत्र में फैली हुई है।